क्षमा शर्मा के बाल साहित्य का समालोचनात्मक अध्ययन

रंजना तिवारी
शोध छात्रा
इंदिरा प्रियदर्शिनी वाणिज्य स्नातकोत्तर
महाविद्यालय हल्द्वानी

शोध सार : यह शोध-पत्र क्षमा शर्मा के बाल साहित्य के विविध आयामों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। क्षमा शर्मा हिंदी बाल साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाकारों में से एक हैं, जिन्होंने बच्चों के लिए मनोरंजक, शिक्षाप्रद एवं संस्कारपरक साहित्य की रचना की है। उनके साहित्य में बाल-मन की सहज अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, नैतिक मूल्यों का समावेश तथा भाषा की सरलता प्रमुख विशेषताएँ हैं। इस शोध में उनके साहित्य के विषय-वस्तु, शैली, भाषा तथा बाल-मनोविज्ञान के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना :

बाल साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण अंग होता है। यह न केवल बच्चों के मनोरंजन का साधन है, बल्कि उनके व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायक होता है। क्षमा शर्मा हिंदी बाल साहित्य की ऐसी सशक्त हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से बच्चों के जीवन में नैतिकता, सृजनशीलता और संवेदनशीलता का संचार किया। उनके साहित्य में बाल-मन की जिज्ञासा, उत्साह और कल्पनाशीलता का सुंदर चित्रण मिलता है।

क्षमा शर्मा के बाल साहित्य में विषय-विविधता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रकृति, समाज, परिवार, नैतिक शिक्षा तथा राष्ट्रीय भावनाओं को समाहित किया है। उनके द्वारा रचित कहानियाँ और कविताएँ बच्चों के लिए रोचक होने के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी हैं।

उनकी रचनाओं की सबसे प्रमुख विशेषता बाल-मनोविज्ञान की गहरी समझ है। वे बच्चों की सोच, भावनाओं और व्यवहार को भली-भांति समझती हैं, जिसके कारण उनकी रचनाएँ बच्चों के मन को सहज ही आकर्षित करती हैं।

भाषा-शैली की दृष्टि से क्षमा शर्मा का साहित्य अत्यंत सरल, सहज एवं प्रभावी है। उन्होंने कठिन शब्दों के स्थान पर सरल एवं प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है, जिससे बच्चे आसानी से उनकी रचनाओं को समझ पाते हैं। उनकी भाषा में लयात्मकता और प्रवाह भी देखने को मिलता है, जो बच्चों को अत्यंत प्रिय है। क्षमा शर्मा के बाल साहित्य में नैतिक मूल्यों का विशेष स्थान है। उनकी रचनाएँ बच्चों को ईमानदारी, सहयोग, प्रेम, करुणा और देशभक्ति जैसे गुणों की शिक्षा देती हैं। वे उपदेशात्मक शैली के बजाय रोचक कथाओं के माध्यम से इन मूल्यों को प्रस्तुत करती हैं, जिससे बच्चों पर उसका गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, उनकी रचनाओं में कल्पनाशीलता का अदभुत समावेश है। वे बच्चों को एक ऐसी दुनिया में ले जाती हैं जहाँ वे नए अनुभव प्राप्त करते हैं और अपनी कल्पना को विस्तार देते हैं।

क्षमा शर्मा की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी विषय-वस्तु की विविधता है। उनके साहित्य में वैज्ञानिक, तर्कपूर्ण, तिलस्मी और जासूसी तत्वों का समावेश मिलता है, जिससे बच्चों की रुचि बनी रहती है। उनकी कई कहानियाँ

जैसे ‘बोलने वाली घड़ी’ और ‘लालू का मोबाइल’ में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किकता का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि वे बच्चों को केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि सोचने और समझने की क्षमता भी प्रदान करती हैं। उनकी भाषा-शैली अत्यंत सरल, सहज और संवादात्मक है, जिससे बच्चे आसानी से कथा को समझ पाते हैं। साथ ही, उनकी कहानियों में मनोरंजन और शिक्षा का संतुलित समन्वय मिलता है। वे नैतिक मूल्यों जैसे ईमानदारी, सहयोग, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समानता को बिना किसी बोझ के प्रस्तुत करती हैं।

उनकी प्रमुख कृतियों में ‘क्षमा शर्मा की चुनिंदा बाल कहानियाँ’ विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसे साहित्य अकादमी द्वारा भी मान्यता प्राप्त हुई है। इस कृति में विविध विषयों को समाहित करते हुए बाल जीवन के अनेक आयामों को चित्रित किया गया है।

समीक्षात्मक दृष्टि से देखा जाए तो क्षमा शर्मा का बाल साहित्य आधुनिकता और परंपरा के बीच एक सेतु का कार्य करता है। हालांकि कुछ आलोचकों का मत है कि उनकी कुछ रचनाएँ अत्यधिक शिक्षाप्रद होने के कारण कथा की स्वाभाविकता को प्रभावित करती हैं, फिर भी उनका समग्र योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली है।

निष्कर्ष:

अंततः यह कहा जा सकता है कि क्षमा शर्मा का बाल साहित्य हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनकी रचनाएँ न केवल बच्चों का मनोरंजन करती हैं, बल्कि उनके नैतिक, बौद्धिक और भावनात्मक विकास में भी सहायक सिद्ध होती हैं। उनकी भाषा की सरलता, विषयों की विविधता तथा बाल-मनोविज्ञान की गहरी समझ उन्हें एक विशिष्ट बाल साहित्यकार के रूप में स्थापित करती है। वर्तमान समय में भी उनके साहित्य की प्रासंगिकता बनी हुई है और यह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1-क्षमा शर्मा -इक्यावन बाल कहानियां (दिल्ली आत्माराम एंड संस 2006)

2-रामचंद्र अग्रवाल – हिंदी बाल साहित्य का इतिहास

3-सुरेश वर्मा– बाल साहित्य: सिद्धांत और समीक्षा

4-श्यामसुंदर मिश्रा – हिंदी साहित्य का इतिहास